

गैर-इमारती वन उत्पादों का सतत् उपयोग- जनजातीय समुदायों को सशक्त बनाने के लिए एक राह



अचला गुप्ता



सत्यजीत भट्टाचार्य



*प्रोफेसर जतींद्र के साहू

ग्रामीण विकास और प्रौद्योगिकी केंद्र भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली, नई दिल्ली 110016

*अनुरूपी लेखक: jksahu@iitd.ac.in

परिचय

गैर-इमारती वन उत्पाद (NTFPs) भोजन, आश्रय, दवा, ऊर्जा और सांस्कृतिक विरूपण प्रदान करने जैसे कई कार्यों को पूरा करके दुनिया भर में लाखों जनजातीय लोगों की आजीविका में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एनटीएफपी में रेजिन, सुगंध, और विभिन्न प्रकार की छाल और फाइबर जैसे बांस, रत्तन, साल, महुआ और अन्य ताड़ की विशाल श्रृंखला, घास और औषधीय जड़ी-बूटियां शामिल हैं। कृषि उत्पादों में, पौधों की जड़ी-बूटियाँ (64.28 प्रतिशत) मुख्य रूप से पेड़ों (21.43 प्रतिशत) और झाड़ियों (14.28 प्रतिशत) का उपयोग करती हैं, जहाँ विभिन्न पौधों के हिस्सों का उपयोग उनके पोषण और रासायनिक गुणों के लिए किया जाता है। NTFP क्षेत्र भारत के प्रमुख असंगठित क्षेत्रों में से एक है, जिसमें लगभग 275 मिलियन की निर्भर आबादी का व्यापक दायरा है और 6000 करोड़ से अधिक का वार्षिक कारोबार है। पूरे भारत में विविध उपयोग और व्यापक वितरण के कारण (चित्र 1), एनएफटीपी अरबों लोगों को हरित सामाजिक सुरक्षा प्रदान करते पाए गए हैं। यह लेख NTFPs के सतत उपयोग के माध्यम

से भारतीय जनजातीय समुदायों के विकास पर एक तकनीकी परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करता है।

एनटीएफपी.एस. - पोषण और चिकित्सा का एक महत्वपूर्ण स्रोत

एनटीएफपी कार्बोहाइड्रेट, लिपिड और प्रोटीन जैसे मैक्रोन्यूट्रिएंट्स के साथ-साथ अन्य महत्वपूर्ण सूक्ष्म पोषक तत्व प्रदान करने में योगदान करते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुमानों के अनुसार, 80 प्रतिशत तक आबादी अपना मुख्य चिकित्सा उपचार पारंपरिक दवाओं से प्राप्त करती है, जिनमें से अधिकांश वनों से एकत्र किए गए पौधे-आधारित हैं।

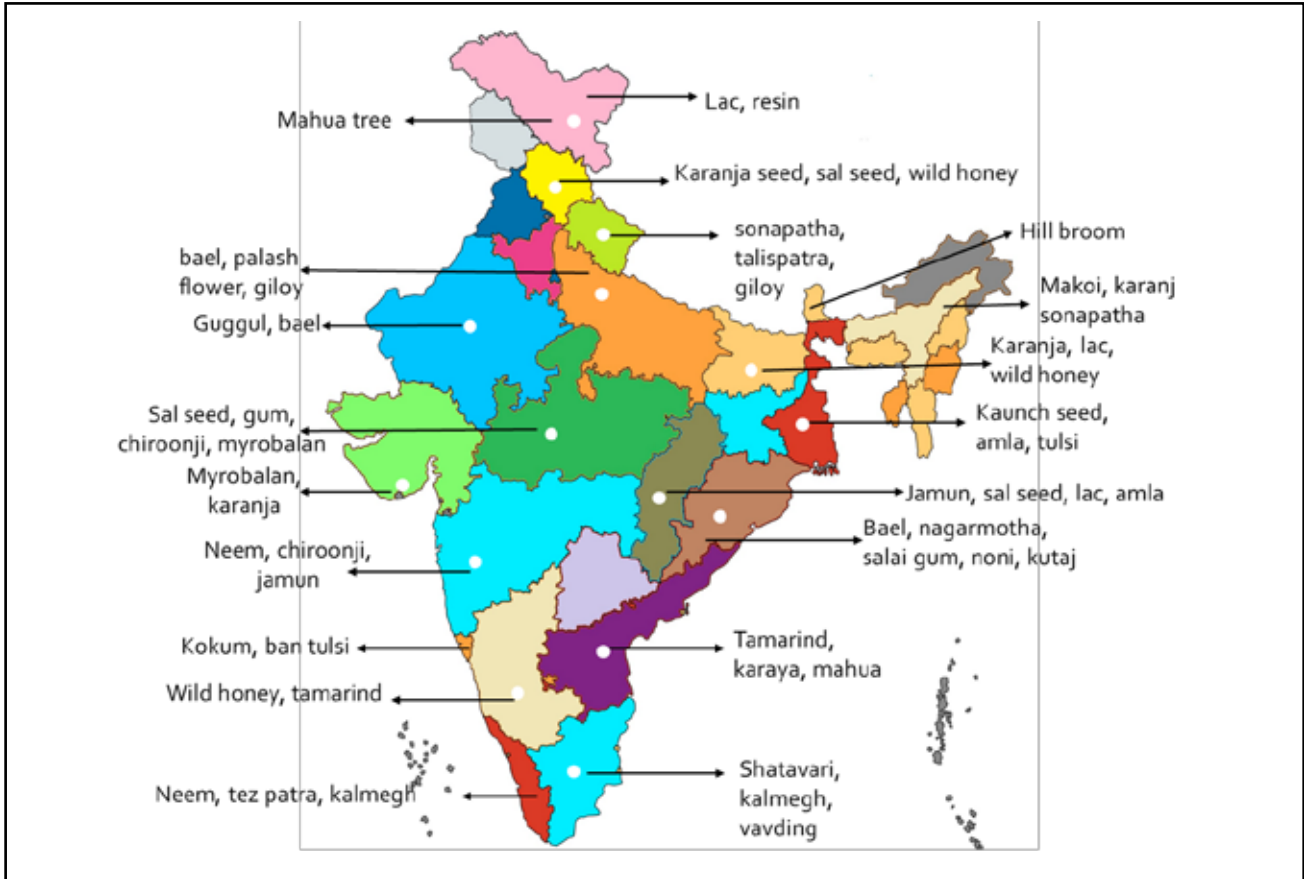
कौचा के बीज (मुकुना ग्रुरिन्स), महुआ के फूल (मधुका लॉगिफोलिया), करंज के बीज (मिलेटिया पिन्नाटा) शंखपुष्पी (कन्वोल्वुलस प्रोस्ट्रेटस), सालवन (डेसमोडियम गैंगेटिकम), बहेडा (टर्मिनलिया बेलिरिका), और गोखरू (ट्रिबुलस टेरेस्ट्रिस) जैसे विभिन्न एनटीएफपी स्वास्थ्य को बढ़ावा देने वाले लाभ प्रदान करने जैसे कि टॉनिक, वाइटलाइजर के रूप में कार्य करने, गुर्दे की पथरी को दूर करने

और त्वचा रोगों को दूर करने में मददगार हैं। अन्य औषधीय महत्व के एनटीएफपी जैसे कि योहिम्बे (पॉसिनिस्टलिया योहिम्बे) स्थानीय रूप से खांसी, सर्दी और बुखार जैसी कई बीमारियों के लिए 'इलाज' के रूप में उपयोग किए जाते हैं। गैर-लकड़ी वन कंद, फल और अंकुर जैसे कि जल रतालू (डायोस्कोरिया अलाटा), काला गंगाल (अल्पिनिया नाइग्रा), तारो (कोलोकैसिया एस्क्युलेंटा) और कड़वा अदरक (जिंजिबर जेरुम्बेट) कुछ ऐसी जंगली फसलें हैं जिनका उपयोग स्थानीय रूप से मासिक धर्म संबंधी विकारों, त्वचा में संक्रमण, पेचिश और कीड़े के काटने के इलाज के लिए किया जाता है।

भोजन, मूल्यवर्धित उत्पादों

और ईंधन के रूप में उपयोग

कटाई के बाद एनटीएफपी के लिए नियोजित प्रथाओं में सुखाने, प्रसंस्करण, भंडारण और पैकिंग शामिल हैं जो उपज की लागत और गुणवत्ता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। कटाई के समय का उत्पाद की गुणवत्ता पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। कालमेघ (एंड्रोग्राफिस पैनिकुलेट) ने संग्रह के समय उच्च उपज



चित्र 1 एनटीएफपी की राज्यवार उपलब्धता

दिखाई क्योंकि इसमें एक अधिक सक्रिय घटक (एंड्रोग्राफोलाइड) होता है। इसी तरह, सर्पगंधा (राउवोल्फिया सर्पेंटिना) की जड़ों की गुणवत्ता फसल के समय से काफी प्रभावित होती है। विभिन्न एनटीएफपी जैसे कि फिजिक नट (जेट्रोफा करकास), महुआ (मधुका इंडिका), तमनु (कैलोफिलम इनोफिलम), कपोक ट्री (सीबा पेंटेड्रा), चाइनीज टॉल ट्री (सेपियम सेबीफेरम) और मलपारी (पोंगोनिया पिन्नाटा) तेल का उपयोग उनमें उच्च मात्रा में मुक्त फैटी एसिड और शर्करा की उपस्थिति के कारण बायोडीजल, बायोएथेनॉल और बायोचार जैसे वैकल्पिक ईंधन का उत्पादन दूसरी बार उत्पादन करने के लिए किया जा रहा है। चिरौंजी, भीलमा और आंवला कुछ अखरोट की गुठली हैं जिनका उपयोग खाद्य तेल, कृत्रिम स्वाद, रंजक, पारंपरिक खाद्य पदार्थों के उत्पादन और उनके संभावित एथनोमेडिसिनल अर्थात् जातीय औषधीय महत्व के लिए किया जाता है। कावा की जड़ें और पत्तियां, समुद्री बकथोरन फ्रूट, अमबाडी और अपराजिता के फूलों का उपयोग पेय

पदार्थ और रेडी-टू-सर्व सिरप बनाने के लिए किया जाता है।

अर्थव्यवस्था और रोजगार के अवसर

एक ओर जहां, वानिकी क्षेत्र में 55 प्रतिशत रोजगार एनटीएफपी क्षेत्र से संबंधित है, भारत में एनटीएफपी संग्रह का लगभग 70 प्रतिशत देश के जनजातीय क्षेत्रों में होता है। एनटीएफपी संग्रह वनवासियों के लिए आय और रोजगार का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, इसका व्यापार और डाउनस्ट्रीम प्रसंस्करण जैसी गतिविधियों के माध्यम से अर्थव्यवस्था पर गुणात्मक प्रभाव पड़ता है। एन.टी.एफ.पी. कुल घरेलू आय का लगभग 10-60 प्रतिशत हिस्सा है और ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लगभग 90 प्रतिशत आदिवासियों का सीधे समर्थन करते हैं। 12वीं पंचवर्षीय योजना के अनुसार, ये दैनिक शुद्ध संसाधन आम तौर पर निर्वाह के लिए कुल घरेलू आय का 20 से 40 प्रतिशत प्रदान करते हैं (एनटीएफपी पर उप-समूह-दो की रिपोर्ट और 12वीं पंचवर्षीय

योजना में उनका सतत प्रबंधन, 2011)। भारत में वानिकी क्षेत्र की सभी नौकरियों में एनटीएफपी का हिस्सा 55 प्रतिशत है और यह 2.7 बिलियन डॉलर का वार्षिक राजस्व उत्पन्न करता है। इसके अलावा, 50 प्रतिशत वन राजस्व और 70 प्रतिशत वन आधारित निर्यात आय ऐसे संसाधनों से उत्पन्न होती है। हालांकि, इन वन संसाधनों से उच्च लाभ के विकास को रोकने वाली सीमित बाधाएं कार्यकाल सुरक्षा, प्रसंस्करण विशेषज्ञता की कमी, खराब बुनियादी ढांचा सुविधा और सीमित बाजार पहुंच हैं।

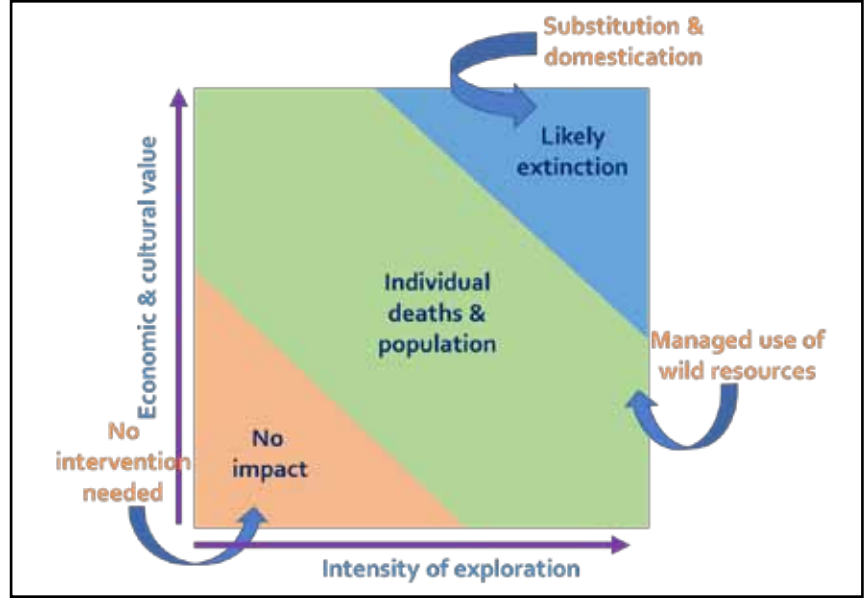
एनटीएफपीएस के सतत् उपयोग के रस्ते

उपयुक्त प्रबंधन प्रणाली (चित्र 2) एनटीएफपी प्रजातियों पर प्रचुर मात्रा में जंगली संसाधनों की बेहतर उत्पादकता और स्थिरता में मदद कर सकती है। एनटीएफपी का आर्थिक और सांस्कृतिक मूल्य काफी सीमा तक दोहन की तीव्रता पर निर्भर है। एनटीएफपी को वर्चस्व और खेत में खेती का उपयोग करके दोहन को

कम करके और किसी दिए गए क्षेत्र में जंगली एनटीएफपी संसाधनों तक पहुंच को परिभाषित करके और फसल स्तर की निगरानी करके प्रबंधित किया जा सकता है। कई एनटीएफपी जैसे बुश बटर ट्री (डैक्रियोड्स), जंगली आम (इर्विंगिया), और अकपी बीज (रिकिनोडेन्ड्रॉन) में एनटीएफपी उत्पादन के निजीकरण के लिए ऑन-फार्म खेती की जबरदस्त क्षमता है। अनियंत्रित और अस्पष्ट एनटीएफपी पहुंच अधिकांश एनटीएफपी को अत्यधिक कटाई के लिए खुला छोड़ देती है और सीधे अपव्यय की ओर ले जाती है।

चुनौतियां और सरकारी हस्तक्षेप

वैश्विक स्तर पर एनटीएफपी बाजारों के विस्तार के बीच भी अपर्याप्त आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन और सीमित तकनीकी जानकारी एनटीएफपी के उपयोग को प्रतिबंधित करती है। एनटीएफपी के साथ सतत फसल कटाई, अस्पष्ट पोषण संबंधी रूपरेखा और बाजार संचालित व्यावसायीकरण के लिए प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण कुछ प्रमुख चुनौतियां हैं। इसके अलावा एनटीएफपी के मूल्य-वर्धित अवसरों की संभावना मुख्य रूप से भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में अप्राप्त है। खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) विभिन्न कार्यक्रमों और योजनाओं के माध्यम से एनटीएफपी को बढ़ावा देने वाली पहली एजेंसियों में से एक है। पिछले एक दशक में, अंतर्राष्ट्रीय विश्व बैंक और कनाडाई अंतर्राष्ट्रीय विकास एजेंसी, अंतर्राष्ट्रीय विकास अनुसंधान केंद्र, अंतर्राष्ट्रीय वानिकी अनुसंधान केंद्र, और प्रकृति के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ और जैव विविधता सहायता कार्यक्रमों जैसी एजेंसियों ने दूसरों के बीच एनटीएफपी की अवधारणा को अपने अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों में शामिल किया है। भारत में, अप्रैल 2018 में "वन धन, जन धन और गोवर्धन" टैग लाइन के साथ शुरू की गई प्रधानमंत्री वन धन योजना



चित्र 2 : एनटीएफपी प्रबंधन विकल्पों पर मूल्य और उपयोग तीव्रता का प्रभाव

(पीएमवीडीवाई) जैसी विभिन्न योजनाएं ग्रामीण और आदिवासी अर्थव्यवस्थाओं के भविष्य के परिवर्तन की नींव बनाने में मदद करेंगी। इसके अतिरिक्त, 2014-15 और 2018-19 के बीच, भारत सरकार ने एम.एस.पी योजना पर लगभग 530 मिलियन रुपये (53 करोड़) का निवेश किया है और राज्य के सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) में अपना हिस्सा शामिल करने का वादा किया है। भारत सरकार द्वारा विकसित नियामक प्रणाली प्रमाणन, कर लाभ, आउटरीच और शिक्षा के माध्यम से निर्माता, व्यापारियों, प्रसंस्करण संगठनों, बाजार पहुंच और प्रीमियम मूल्य निर्धारण की निगरानी के लिए समर्थन पर ध्यान केंद्रित कर रही है।

निष्कर्ष

एनटीएफपी वन निवासियों के लिए घरेलू खाद्य सुरक्षा, पोषण और निर्वाह प्राप्त करने के लिए आर्थिक और पोषण मानकों में योगदान देता है। हालांकि, नीति निर्वात(पॉलिसी वैक्यूम), गैर-विनाशकारी कटाई, प्राकृतिक आवासों

का विनाश, बुश-फायर(पेड़-पौधों में आग), जनसंख्या वृद्धि और उच्च मांग सहित कई कारक एनटीएफपी के उचित उपयोग और विकास में बाधा डाल रहे हैं। विशेष रूप से आर्थिक रूप से हाशिए पर रहने वाले और वन-निर्भर समुदायों के लिए एनटीएफपी के सतत प्रचार, एनटीएफपी के वर्चस्व, कटाई और प्रसंस्करण तकनीकों में सुधार के लिए जनजातीय भोजन और सामाजिक सुरक्षा, गरीबी में कमी और बेहतर आजीविका के लिए एक उपयुक्त नीति ढांचा आवश्यक है। एनटीएफपी से बेहतर रिटर्न प्राप्त करने के लिए निजी और सार्वजनिक क्षेत्र में मौजूदा योजनाओं के अभिसरण के लिए सुविधाओं की रणनीति तैयार की जानी चाहिए।



संदर्भ :

1. पांडे, ए.के., त्रिपाठी, वाई.सी., और कुमार, ए. (2016)। सतत आजीविका के लिए गैर इमारती वन उत्पाद (एनटीएफपी): चुनौतियाँ और रणनीतियाँ। रिसर्च जर्नल ऑफ फॉरेस्ट्री, 10(1), 1-7 ।
2. 12वीं पंचवर्षीय योजना में एनटीएफपी और उनके सतत प्रबंधन पर उप-समूह-द्वितीय की रिपोर्ट (अंक सितंबर)। (2011)।